सत्य साहित्य

वर्ष 6 / अंक 1
अक्टूबर 2022
Year 6/ No. 1
October
2022

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

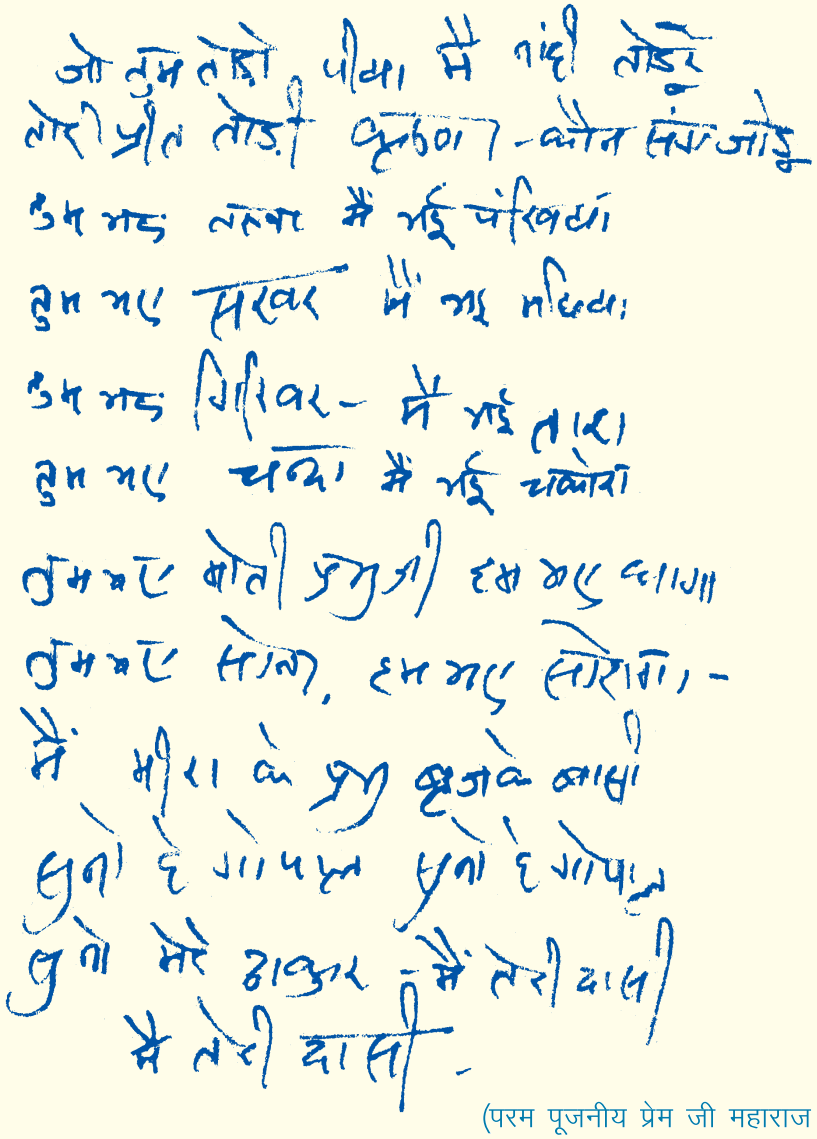

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Purity of Mind
- यात्री — भाग–4
- चाह में आह
- आप बीती
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण : जालन्धर
- विभिन्न केन्द्रों से
- बच्चों के लिए
- कैलेन्डर

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

To-day is great festival - Deepawali. candles & lights are lit all around. Loud noise of crackers is audible from far & near. Heartly congratulations to all of you. May the light of Ram Nam dispel darkness of ignorance from within.

May you all ever remain blessed. Shree Ram Sharnam lit with lights & candles looks fabulous.

आज दिवाली का महान त्योहार है। चारों ओर दिए और मोमबत्ती जल रहे हैं। आसपास से पटाखों की आवाजें सुनाई दे रही हैं। आप सभी को बहुत–बहुत शुभकामनाएँ। राम नाम का प्रकाश हमारी अज्ञानता के अंधेरे को दूर करे... आप सभी पर हमेशा कृपा बनी रहे। श्रीरामशरणम् रोशनी से जगमगा रहा है और बहुत सुंदर लग रहा है।

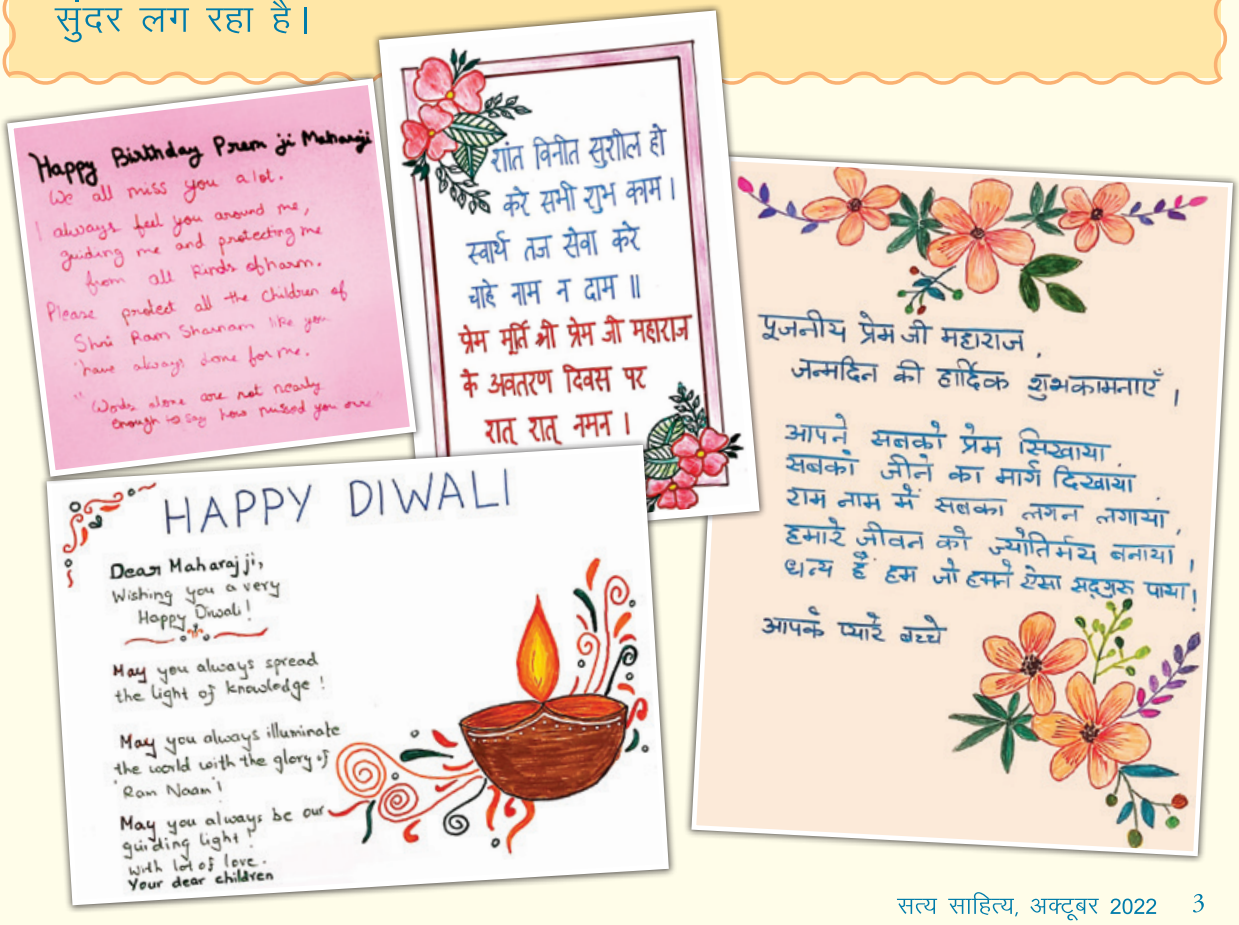

PURITY OF MIND

सत्यानन्द

In yesterday's discourse at this time it was pointed out that fearlessness is found in Godly beings. The next quality Maharaj Shree Krishna ji says is *Satva Sanshuddhi,* purity of mind, the state of inner cleanliness. Man is deceitful within. He may have a blooming lotus-like countenance, sweet sandalwood-like speech, but evil designs in his heart. What wicked persons have in their mind and what they say are altogether different. Wicked thoughts do not arise in the mind - this is a characteristic of Godly nature. Not allowing evil desires to arise - this is Godliness. The idle mind is the devil's workshop. Keeping the mind occupied is a good way of not allowing evil desires and intentions to arise.

Someone asked an elderly person, what is your age? He counted on his fingertips and said he was seventy years old. On hearing this, the other person said you look so good. Well, what indeed is the reason that you don't look seventy? He replied, I do not know of any other reason, but yes, one thing is for sure that I do not pollute my mind. This my father had taught me- to never pollute my mind. Those who walk the righteous path are bound to face ups and downs. In this world we come across both good and bad people. I have never allowed my mind to get stained- this is all I have practiced. Then again, in my spare time, I used to repeat the name of God. The other person asked, surely you would have faced difficulties? He replied - yes, the woman I married, seeing her behaviour and disregard, how could I not become bitter and abusive? But I made up my mind not to allow bitterness to enter my heart. Never did I scold her, or admonish, or rebuke her. If I had allowed my mind to get polluted, only then could such an opportunity have presented itself. In the fifth year of marriage, she herself said that your attitude has overwhelmed me, it has changed my nature. I said, if your nature changes, it would be a very good thing. I saw that she changed completely. If I had allowed negativity to take root, anger to arise in my heart, then my domestic life would have been altogether different.

That person again asked, you must have faced other difficulties in life as well? He replied, my brother was very lazy and negligent. He did not give much time to business. So long father was alive he was all right. I also thought it is best that father be the one to talk some sense into him. After father's passing away, he asked for division of property. He asked for more and I gave it. You are my brother after all, if you need more, then take it. After some time had passed, his children did not even have enough clothes to cover themselves during winter. This was but natural as he had fallen into bad company. I told him, I am your brother. Although property has already been divided, but my house is also your house. Out of brotherly affection, I

request you please accept these clothes, etc. He started crying. After that day he stopped criticising me in front of others. After some days he came to me and said, the sweetness of your heart has conquered me. Today he is such a close brother that one cannot find another like him in this town.

I faced another problem as well. Some new government officials took charge, who were quite unorthodox. They used to summon me for every small thing. They were vexed. They became suspicious that I was in league with crooks. I thought to myself, I have done no such thing. If they think, so then let them. Whatever anyone asked me, I answered candidly. After all this was government procedure. First one person examined the accounts, then a second, then a third. It was very time consuming. My wife and sons all tried to prevail upon me, but I did not comply with any suggestion to raise my voice in self-defence, or to go around giving clarifications. In the end everything was officially resolved. After two years, my integrity was once again established and the Maharaja himself invited me and said that people had accused me of a lot of things. So an enquiry, etc. had to be conducted. I am regretful for the same. Anyway the point is that father's teaching came in handy. I did not forsake my cool-headedness, did not allow negativity to enter my mind, and following father's instructions, all my problems and suffering went away on their own accord.

The point I am trying to make is that purity of mind, cleanliness of mind is a big thing. Those of a Godly nature have it and one who assimilates this quality must reverently regard it as a Divine treasure.

(Translation from Pravachan Piyush Pg 229-231) ■

यात्री - 4

(17 जनवरी के दिन बिलूर मठ में)

प्रेम

भ्रमण करते–2 बंग देश में आ पहुँचे। 16 जनवरी को कलकत्ते में एक बंगाली मित्र के साथ घूमते हुए दक्षिणेश्वर जी के दर्शन प्राप्त हुए। गंगा के तट पर एकान्त में काली देवी का मन्दिर है। किसी रानी (रासवनी) ने बनवाया था। इसी मन्दिर में – एक समय श्री रामकृष्ण परमहंस जी ने 20 वर्ष की आयु में पुजारी की सेवा स्वीकार की थी। इस मन्दिर में परम पावन 'राम नाम' द्वारा साधना साध कर 'माँ' काली देवी के दिव्य दर्शन लाभ किये थे। श्री केशव चन्द्रसेन ने भी यहीं प्रभावित होकर उस अनजान ब्राह्मण युवक की हस्ती का सितारा चमकाया। यहीं नरेन्द्र, स्वामी विवेकानन्द बन कर गुरुदेव की शक्ति के पात्र बने और देश देशान्तरों में परमहंस जी के नाम और काम को प्रकाशित किया। परन्तु आज

वहाँ पर न कोई पुजारी था न कोई दर्शक। वहाँ से नौका लेकर गंगा को पार कर बिलूर मठ जाना था।

जूट के कारखानों के लिये कच्चा माल लाद कर नौकाएँ जा रही थीं। उनमें बिहारी लोग कीर्तन करते, नाचते और गाते जा रहे थे।

कृष्ण मुरार-मोरी नैया लगा दो पार।
मोरी नैया लगा दो पार।
कृष्ण मुरार-मोरी नैया लगा दो पार।।
अब की बार-तो लगा दो पार,
कृष्ण मुरार, कृष्ण मुरार, कृष्ण मुरार।
मेरी नाव पड़ी मँझधार,
लगा दो पार, लगा दो पार।।
नैया किनारे आ लगी!

सब यात्री उतर गए और अपनी अपनी राह पड़े। दोनों मित्र बिलूर मठ पहुँचे। बड़ी धूमधाम थी, कितने ही युवक भगवे वस्त्र पहने फिर रहे थे। परन्तु यह नहीं समझ आई कि किससे बात करें। इतने में एक साधु कमर टेढ़ी किये धीरे धीरे चल रहे थे। यात्री ने आगे बढ़कर नमस्कार किया और पूछा "महाराज आपको क्या कष्ट है ?" "मेरी कमर में बल पड़ गया है, इसलिए बहुत तंग हूँ" साधु ने बड़े प्यार से उत्तर दिया। फिर यात्री ने कहा, "महाराज – यदि आज्ञा हो तो मैं मालिश कर दूँ उससे सम्भवतया श्रीराम कृपा से जल्दी ठीक हो जाओगे।" वे महात्मा मान गए और अपने कमरे में ले गए और कहने लगे कि कल 17 जनवरी को श्री स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म दिवस है, कल आओगे तो सबसे परिचय भी करवा दूँगा और प्रसाद भी ले दूँगा, दोनों यात्री बड़े प्रसन्न हुए। परमेश्वर ने अपने आप राह निकाल दी। अगले दिन समय पर दोनों उस महात्मा के कमरे में सीधे चले गये। महात्मा ने बताया "स्वामी विवेकानन्द जी जब अमेरिका से वापिस लौटे तो एक अमेरिकन युवती उनके साथ आई। उसने यह मन्दिर बनवाया। परन्तु वे देवी इतनी स्वार्थ रहित हैं कि अपनी कीर्ति नहीं सुनना चाहती। अतः किसी के सामने नहीं आती। अपने में ही वे बहुत वर्षों से (स्वामी जी के निर्वाण के बाद भी) रह रही है। कितनी स्वार्थ रहित देवी है। स्वामी जी(स्वामी राम कृष्ण परमहंस) ने निष्काम सेवा पर ही अधिक बल दिया है। परन्तु देश की गरीबी के कारण महाराज को धन दूसरे देशों से माँगना पड़ा। स्वामी जी ने स्वयं बचपन में बड़े कड़े दिन देखे थे। छोटी आयु में ही पिता का परलोक सिधार जाना और फिर मकान मालिक का किराये के लिये माँ को दुःखी करना, यह सब ठोकरें जीवन काल के शुरू में ही खाई थीं। इसी लिए अब परमहंस जी के नाम पर जनता के लिए स्कूल, कॉलेज और हस्पताल आदि स्थान–स्थान पर चल रहे हैं। वहाँ साधु सेवा करते हैं और अपने प्यारे प्राणों सहित शरीरों को समर्पण किये अपनी बलवती आयु की सूतली से बंधे हुए रह रहे हैं। ऐसी बातें करते घड़ी की ओर ध्यान गया तो वे महाराज उठ बैठे और कहने लगे – चलो कीर्तन का समय हो गया है। आओ मन्दिर में चलें। बहुत बड़ा हॉल था। परमहंस जी की मूर्ति के सामने मृदंग से 5–7 युवक कीर्तन कर रहे थे बंगला भाषा में, बड़ा अमृत बरस रहा था। सभी मस्ती में झूम रहे थे। आधा घन्टा कीर्तन हुआ और फिर सब लोग बाहर पंक्तियों में बैठ गये। सबको प्रसाद बाँटा गया। परन्तु इन दोनों मित्रों को साधु महात्मा ने अपने कमरे में बुलाकर कई प्रकार के प्रसाद दिये। जो विभिन्न प्रकार के प्रसाद उन अपरिचित यात्रियों को शायद प्राप्त न होते।

उन दोनों मित्रों ने महात्मा के साथ जाकर स्वामी विवेकानन्द जी की मूर्ति के दर्शन किये और महात्मा का भी बहुत धन्यवाद किया तथा परमेश्वर की महिमा की चर्चा करते हुए वापस लौट गये।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का लेख सत्य साहित्य फरवरी 1963) ■

We must not desire anything but keep on Thanking Shri Ram for all that He HAS GRANTED US. We actually do not deserve even this much

You must Struggle hard & keep on reciting Ram Ram. Yours recitation & selfless service shall uplift

My lots of love Prem

हमें किसी चीज की चाह नहीं करनी चाहिए अपितु श्री राम ने जीवन में हमें जो कुछ भी दिया है उसके लिए धन्यवादी होना चाहिए। दरअसल हम तो उसके भी काबिल नहीं हैं, आप संघर्ष करते रहिए और राम राम का जाप करते रहिए। आप का जाप और सेवा ऊपर उठाएगा। मेरा बहुत सारा प्यार। ■

चाह का रूपांतरण

श्री राम जय राम, जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम।
श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम।।

चर्चा चल रही थी साधकजनो चाह के ऊपर। चाह शब्द को देखें आप "च आ ह" जहाँ चाह होगी, वहाँ आह होगी ही होगी। चाह शब्द में ही आह है। इस चाह शब्द में ही दुख निहित है, बेचैनी निहित है, चिंता निहित है आह"। चाह यदि आती है, तो इसे सांसारिक कामना समझा जाता है। परमेश्वर प्राप्ति की चाह को चाह नहीं कहा जाता। चाह अति निकृष्ट शब्द है, इसे भौतिक कामनाओं के लिए ही प्रयोग किया जाता है। आपने उस दिन सुना था–

चाह चूड़ी चमारी, नीचन ते अति नीच,
तू तो पूर्ण ब्रह्म था, चाह ना होती बीच।।

इस चाह के कारण ब्रह्म, बंदा बन जाता है। यह चाह कितनी निकृष्ट है।

हम तो खुदा थे, यदि दिल में कोई मुद्दा ना होता।
हमारी आरजूओं ने हमें बंदा बना दिया।।

चाह कितनी निकृष्ट है, साधकजनों इससे हर साधक को बचना चाहिए। इसीलिए निष्काम भक्ति, निष्काम ही सेवा। पूज्य पाद प्रेम जी महाराज के दो शब्द बहुत प्रसिद्ध शब्द हुआ करते थेः "निष्काम सेवा एवं निष्काम भक्ति"।

निष्काम सेवा एवं निष्काम भक्ति के साथ कोई कामना नहीं जुड़ी हुई होनी चाहिए, तो यह फलवती होती है, तो इनसे सफलता प्राप्त होती है। भक्त कबीर एक बड़ा सुंदर उदाहरण देकर तो हमें समझाते हैं–किसी ने पूछा होगा उनसे, आप भी राम राम जपते हो, हम भी राम राम जपते हैं। हमें वह लाभ क्यों नहीं होता, जो आपको हुआ है? आपको तो इस राम नाम ने औरों को लाभ पहुँचाने के योग्य बना दिया है और हमें राम–राम जपने से स्वयं को ही कोई लाभ नहीं हुआ। क्या कारण है? कबीर साहब समझाते हैं–बंधुओ एक किसान है। वह बीज बोता है, खाद डालता है, पानी देता है, बहुत मेहनत करता है। लहलहाती खेती तैयार हो जाती है। पौधे खूब बड़े हो गए हैं। अब प्रचुर फल लगना था, फूल लगना था इत्यादि इत्यादि। वह भी लग गया है। लेकिन खेती तैयार होने पर यदि भीतर पशु घुस जाते हैं, तो वह सारी की सारी फसल को बर्बाद कर देते हैं। किसान के हाथ कुछ नहीं लगता। यही हालत हम संसारियों की है। हम कमाई तो करते हैं, लेकिन कामना के पशु भी हमारे पास बहुत हैं, जिन्हें बीच में छोड़ देते हैं तो हमारे पास कोई कमाई बाकी नहीं बचती। कबीर साहब कहते हैं, ''यह शैतान मेरे पास रोज़ आता है। चाह की तुलना, कामना की तुलना, यह शैतान और कुछ नहीं, हमारे अंदर चाह जो भरी जाती है, तरह–तरह की चाह कामनाएँ हमारे अंदर, अपेक्षाएँ हमारे अंदर भरी हुई हैं, यह शैतान हैं। मेरे पास शैतान रोज़ आता है, आकर पूछता है, क्या खाओगे? मैं कहता हूँ मिट्टी। क्या पहनोगे? मैं कहता हूँ कफन। वह शैतान मेरे से पूछता है, कहाँ रहोगे? मैं कहता हूँ श्मशान में। बेचारा मुँह लटका कर वापस चला जाता है। क्यों? संसारी इन्हीं चीजों में फँसा रहता है, और मुझे वह फँसा नहीं सकता, इसलिए तो मुँह लटका कर तो चला जाता है।'' यह कामना, यह चाह, साधकजनो शैतान के काम हैं।

उस दिन चर्चा चल रही थी कि इस चाह को अचाह कैसे बनाया जाए? कामना मिटती तो है नहीं, मिटाई नहीं जा सकती, इसे नष्ट नहीं किया जा सकता, इसका रूपांतरण किया जा सकता है। Transform it. कैसे किया जाए? एक उदाहरण आपकी सेवा में प्रस्तुत की थी, किसी ने आपको मिलने के लिए आना है, मौसम बहुत खराब है, या किसी कारण आप व्यस्त हैं। आपके मन में यह चाह हुई कि परमात्मा करे, न आए तो अच्छा है। मेरे पास समय भी नहीं है, मौसम खराब है। उसे दूर

से आना है, पता नहीं समय से आ भी पाएगा कि नहीं। धुंध बहुत है इत्यादि इत्यादि। आपके मन में चाह है कि वह व्यक्ति न आए, लेकिन वह व्यक्ति आ जाता है। अब या तो आप अपने मत्थे पर हाथ मारोगे कि लो मैं कुछ सोच रहा था और कुछ हो गया। यह तो एक संसारी की बातें हैं परन्तु जिसे चाह का रूपांतरण करना है, उसकी यह सोच नहीं है। वह कहता है,''स्वागत है आपका, पधारिएगा।'' अपनी चाह को उसकी चाह में मिला देना, यह चाह का रूपांतरण है। आपने अपनी चाह को उसकी चाह में मिला दिया, जो उसकी चाह है, वह पूर्ण हो गई, बस मेरा काम बन गया । उसको मेरे कारण सुख मिल जाए मुझे और क्या चाहिए? हर एक की माँग तो सुख ही है न।

मेरे मन की हो, साधकजनो बड़ा भारी रोग है। यही सबसे बड़ी चाह। यही हर कोई चाहता है, कि सारा संसार, गुरु, परमात्मा सब मेरे मन की करें।

मेरे मन की हो, साधकजनो बड़ा भारी रोग है। यही सबसे बड़ी चाह। यही हर कोई चाहता है, कि सारा संसार, गुरु, परमात्मा सब मेरे मन की करें, जो मैं चाहता हूँ, वही होना चाहिए। भारी दुखदाई चाह, मेरे मन की हो। बहुत दुख देने वाली चाह। हर कोई मेरा कहना माने, हर कोई मेरा subordinate बन कर रहे। कोई मुझे bypass करके देखे, कोई मेरी अवहेलना करके किसी दूसरे से कोई approach करता है, तो आप आग बबूला हो जाते हो क्योंकि आप की चाह है, कि मेरे मन की हो। हर कोई मेरी इच्छा के अनुसार चले। घर घर की यही कहानी है। पति यही चाहता है, तो पत्नी भी यही चाहती है। तो फिर क्या होता है, आप सब जानते हो। यदि दो लोग इस प्रकार के हों, तो क्या हालत होगी? तनिक सोचो देवियो, देवरानी घर में आई है। जेठानी पहले थी, देवरानी घर में आई है। ननद भी है घर में। कुछ ही दिन हुए हैं अभी आए हुए, बड़ा चाव है मैं ससुराल में जाकर पति को, सास को अच्छी–अच्छी चीजें बनाकर खिलाऊँगी, उनको प्रभावित करूँगी, उनके मन को जीतूँगी।

रविवार का दिन है आज। आज देवरानी ने कहा,''मैं आपको पुलाव और दही भल्ले बनाकर खिलाऊँगी।'' जेठानी कहती है,''नहीं, रविवार को यह चीज हमारे यहाँ नहीं बनती। तुम्हारे मायके में बनती होगी, लेकिन यहाँ ससुराल में ऐसा नहीं है, यह हमारा system नहीं है। हम तो आज के दिन सारे औरों को भी बुलाते हैं, इकट्ठे होते हैं, और ढेर सारे कढ़ी चावल बनाते हैं पकोड़े डालकर, तो आज तो वह बनेंगे।'' यदि देवरानी मान जाती है तो समझदार, यदि नहीं मानती तो दो चूल्हे होंगे। यदि मान जाती है, अपनी चाह को अपनी जेठानी की चाह में मिला देती है, तो यह चाह का रूपांतरण; सुख, चैन, कोई तनाव नहीं, कोई किसी प्रकार का कोई संघर्ष नहीं। यह चाह का रूपांतरण हो गया। सास रोज मंदिर जाती है। आज लौट रही है। इसी बीच एक संत महात्मा, एक भिखारी उनके घर गए हैं, जाकर भिक्षा माँगी। बहू उन्हें जानती है, रोज या सप्ताह में एक–आधी बार आते हैं। भीतर से विनम्रतापूर्वक कहा,''महाराज! क्षमा करें अभी भोजन तैयार नहीं है, मैं क्या भिक्षा दूँ आपको? घर में अभी खाने को कुछ नहीं है, कोई ताज़ी चीज़ बनाई नहीं हुई। आटा, चावल आप लेते नहीं हो, भोजन लेते हो आप। भोजन अभी तैयार नहीं है।''

साधु ने यह बात सुनी, और आगे चले गए। कोई आधा एक किलोमीटर गए होंगे, किसी दूसरे घर से, हर घर से माँगते नहीं है, किसी

किसी घर में जाते हैं वह साधु। किसी दूसरे घर तक अभी पहुँचे नहीं, तो सास रास्ते में मिली। ''राम राम महाराज! क्या बात है घर नहीं गए आप?'' गया था। फिर वहाँ से भिक्षा नहीं मिली? नहीं। क्यों, क्या हुआ? बहुरानी ने कहा महाराज क्षमा करें, अभी भोजन तैयार नहीं है। उसकी यह हिम्मत, उसने यह कैसे कह दिया कि घर में भोजन तैयार नहीं है। चलिए मेरे साथ। वापस ले आई है। आधा किलोमीटर चलकर गए थे, आधा किलोमीटर वापिस ले गई है। बेचारे को उधर से भी भोजन से रखा। घर आई है सास। रुकिए महाराज, मैं अभी आती हूँ। बहु को डाँटा डपटा है। खूब डाँटा। क्यों ऐसा कहा तूने, क्या बात है? वह संत महात्मा लगभग हर बारी हमारे घर आते हैं, कभी खाली नहीं गए, इत्यादि इत्यादि। जैसे भी अपनी आदत के अनुसार जैसा कहना होता है, वैसा कहा। बहु ने सब कुछ सुन लिया। आगे से कुछ जवाब नहीं दिया, बहुत समझदार है बहुरानी। अपना मुख नहीं खोला, राम–राम जपने वाली है। घर का एक चक्कर लगा लिया है सास ने, उसको भी पता है कि भोजन अभी तैयार नहीं है। आकर साधु महाराज को कहा,''महाराज! क्षमा करें भोजन अभी तैयार नहीं है।'' क्या अंतर है दोनों की बातों में। यही न, सास किस लिए आग बबूला हो गई, क्यों बेचारे को भूखा वापिस ले आई? इसलिए कि जो बहू ने कहा है वह उसे पसंद नहीं है । क्यों? उसके मन के अनुसार नहीं कहा, उसको bypass करके कहा है, उसकी अवहेलना करके कहा है। कहा होता आप बैठिए महाराज, सासू माँ अभी आने वाली है, तब तक भोजन भी तैयार हो जाएगा। इस प्रकार की कोई बात करी हुई होती।

खेल तो देवियो सज्जनो! इस मन के ही हैं। इसी के अंदर हैं यह सारी कामनाएँ, इसी के अंदर हैं सारे संकल्प। सारे के सारे दोष इसी के अंदर हैं। जिस किसी भाग्यवान ने इसे सिधा लिया, वह साधक बन गया। अन्यथा साधना जारी रखने की जरूरत है। आदत बहुत गंदी है। यह आदत पहले यहाँ से शुरू होती है, फिर गुरु तक जाती है, फिर परमात्मा तक जाती है। ऐसे व्यक्ति जो अपने मन के अनुसार चलाना चाहते हैं संसार को। कैसे चले? वह गुरु को भी चलाते हैं, और परमात्मा को भी चलाना चाहते हैं ।

बांके बिहारी जी के मंदिर में एक व्यक्ति सुबह–सुबह चला गया है। जोर–जोर से चिल्लाने लग गया, मुझे सुख चाहिए। भगवान कहते हैं,''अरे वाह ! सुख तेरे अंदर, स्रोत तेरे अंदर दिया हुआ है मैंने सुख का, तू बाहर क्यों भटकता फिरता है।'' नहीं, मुझे पुत्र चाहिए, मुझे पुत्र का सुख चाहिए, और मुझे एक साल के अंदर–अंदर चाहिए। मेरी किस्मत में नहीं लिखा है, तो भी मुझे चाहिए। आप सोचें, इस व्यक्ति को कभी कोई सुख दे सकेगा। नहीं, इसको हाड मांस का बोरा चाहिए, इसे सुख नहीं चाहिए। अरे तुम्हें सुख चाहिए होता, तो मैं तुम्हें अपने दर्शन का सुख देता। तुम्हें सुख चाहिए होता, तो मैं तुम्हें मुक्ति का सुख देता, तुम्हें समाधि का सुख देता, तुम्हें अपनी समता का सुख देता, तुम्हें अपने प्रति ममता का सुख देता। तू सुख नहीं चाहता।

तू तो एक हाड मांस का बोरा चाह रहा है, तुझे सुख नहीं चाहिए। ऐसे लोग देवियो सज्जनो! गुरुओं को भी, संतों को भी अपने इशारों पर चलाना चाहते हैं, अपने मन की मनवाना चाहते हैं और फिर परमात्मा को भी। आदत बहुत गंदी है, अतएव त्यजनीय है। इसे छोड़ना चाहिए।

(परम पूजनीय महाराज जी के प्रवचन से 23.1.12) ■

Param Pujniya Shree Prem ji Maharaj: The Embodiment of Love

I was about 14 years old when I received initiation from my master –Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj. I was blessed to be the third generation in my family to have done so.

Childhood was abound with fascinating conversations with my highly spiritually elevated maternal grandfather about spiritually awe-inspiring incidents that were first-hand in nature.My grandfather went very deep into Sadhna and often told me *'Guru ko pakdo'* or hold steadfast to the Master- to Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj. He emphasised the unsurpassable relevance to comprehend the depth and the role of the Spiritual Master. Such contemplation and eventually realisation would help one deeply in Sadhna and in life itself.

Who is a Guru? What is his Role? Why do I Need Him and His guidance? An already Enlightened Being of the Divine- a true Master has the task to spiritually implant the seed of God deep within one's soul- the soul that has been dormant spiritually for many births. He awakens the Spiritual Force within by planting His Divine Name by being the Sacred Conduit. *'Bin Guru Gyaankahanseypaau, dijodaanhari gun Gau.. Sabhi gunijun per tumra raj...'* The Spiritual Master commands the realm Beyond. And indeed Salvation itself lies at the feet of the Guru.

He is the door, the tunnel, the vessel, who will and has the power to deliver me, deliver my soul. My Guru is already free, yet He devotes Himself, not to the enjoyment of the fruits of the heavens, but becomes the keeper of my soul - the Deliverer of *Moksha*. Salutations to the Great Master! My heaven lies at your Holy Feet!

One incident comes to my mind - when the doctor who was heading the hospital in an area where my late grandfather was the sub area commander, was gravely ill and was in coma in the army hospital in Delhi, my grandfather asked my mother to go and seek Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj's Blessings for him, so he may be relieved of his immense suffering. On hearing this Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj went to the hospital along with my mother. Pujniya Shree Maharaj Ji stood at the foot of the doctor's bed. The body was convulsing. Shree Maharaj Ji stood in silence and folded His hands in *Namaskar.* Before my mother's eyes, the body completely quietened. The next day he passed on peacefully.

The day Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj left His mortal form, my mother was overseas. In the wee hours of the morning Shree Maharaj Ji came to my mother in her dream and communicated with her. She dreamt that Pujniya Maharaj Ii was standing on an elevated platform. He bent down and gave His hand to her to pull her up. My mother remembers vividly that she was struggling with great effort to climb up that platform with His help. The dream ended, with my mother, waking up. Later that day, she got a call from Delhi that Shree Maharaj Ji had left His physical body.

Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj was the embodiment of Love which is something which Pujniya Vishwamitra Ji Maharaj told me. As my beloved grandfather would often say about Pujniya Prem Ji Maharaj: 'Look at His eyes... it seems the entire Universe is immersed in them.' Indeed, He was the Divine Manifest in human form. ■

श्रीरामशरणम् जालन्धर - एक ऐतिहासिक विवरण

(श्रीरामशरणम् जालन्धर – एक ऐतिहासिक विवरण के अर्न्तगत लेखों की अगली कड़ी)

परम पूजनीय गुरुजनों की जालन्धर पर असीम कृपा रही है। परम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी महाराज जालन्धर में विक्रमपुरा में काफी देर तक रहे। परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज जी की बड़ी कृपा रही कि वे भी लगभग हर वर्ष सत्संग हेतु जालन्धर पधारते रहे। परम पूज्य डॉ. विश्वामित्र जी महाराज तो तिलक होने से पूर्व भी स्नेहवश जालन्धर में सत्संग के लिए पधारते रहे।

लगभग 50 वर्ष पूर्व मार्च 1973 में जालन्धर में साप्ताहिक अमृतवाणी सत्संग परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज के एक अति प्रिय वरिष्ठ साधक के निवास स्थान पर प्रारम्भ हुआ और कालान्तर में दिसम्बर 1982 तक मोता सिंह नगर में होता रहा। इसके पश्चात् उनके दूसरे शहर में शिफट हो जाने के कारण यह साप्ताहिक सत्संग एक अन्य वरिष्ठ साधक के निवास स्थान सैन्ट्रल टाऊन/कृष्णा नगर में नियमित रुप से चलता रहा। साधकों की बढ़ती संख्या के कारण यह साप्ताहिक सत्संग 14 मई 1995 को जे.पी.नगर में शिफट हो गया।

वर्ष 1992 में उनके 8 फरवरी से 22 फरवरी तक श्रीमद्भगवद्गीता पर प्रवचन हुए। वर्ष 1993 में 1 जनवरी से 15 जनवरी तक प्रातः श्रीमद्भगवद्गीता न्यू जवाहर नगर में और सायं श्री नारद भक्तिसूत्र पर आर्य समाज मन्दिर बस्ती दानिशमंदा में प्रवचन होते रहे। उन दिनों सारा स्थान खचाखच भरा होता था।

परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के सान्निध्य में अक्तूबर 1994 एवं मार्च 1996 में जालन्धर में दो साधना सत्संग लगे।

परमेश्वर कृपा एवं पूज्य गुरुजनों के आशीर्वाद से साधकों की संख्या उत्तरोतर बढ़ती गई। जालन्धर के वरिष्ठ साधकों ने परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज से यहाँ श्रीरामशरणम् बनाने के लिए प्रार्थना की तथा उनकी कृपा से लगभग 91 मरले भूमि बस्ती दानिशमंदा में खरीद ली गई। 17 नवम्बर 1997 को श्रीमराशरणम् भवन का शिलान्यास परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के कर कमलों से हुआ। उस दिन महाराज श्री ने फरमाया था कि परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज एवं परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज को जालन्धर के साधकों से बहुत अपेक्षाएँ हैं। शिलान्यास के उपरान्त परमेश्वर की कृपा एवं परम पूजनीय गुरुजनों की प्रेरणा से श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया। साधकों के अपार उत्साह से भव्य भवन बनना शुरु हो गया जिसमें 65 फुट X 65 फुट का हॉल, हॉल के तीनों ओर बरामदा, जाप का कमरा, बुक स्टॉल इत्यादि बनाए गए। हॉल में लगभग 750 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है।

9 दिसम्बर 2001 को परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज के तिलक दिवस पर श्रीरामशरणम् जालन्धर का परम पूजनीय महाराज श्री के कर कमलों द्वारा विधिवत् शुभ उद्घाटन हुआ। उद्घाटन से पहले सात दिवस श्री राम नाम का अखण्ड जाप हुआ। श्रीरामशरणम् में परम पूजनीय

गुरुजनों की कृपा से दैनिक व साप्ताहिक सत्संग निर्विघ्न चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त मंगलवार, हर माह की 2, 13, 29 एवं पूर्णिमा पर जाप होते हैं। विशेष दिवसों (परम पूज्य गुरुजनों के अवतरण व निर्वाण दिवस एवं गुरु पूर्णिमा) पर पुष्पाजंलि समारोह में साधक भारी संख्या में बड़े भाव–चाव से सम्मिलित होते हैं।

परम पूजनीय डॉ. विश्वामित्र जी महाराज के जालन्धर आगमन पर भारी संगत को देखते हुए समय–समय पर गीता मन्दिर आदर्श नगर, श्री सत्य नारायण मन्दिर, देवी तालाब मंदिर प्रताप बाग, अर्बन एस्टेट इत्यादि में विशेष सत्संगों का आयोजन होता रहा है।

परम पूजनीय महाराज श्री की अनुमति से दिसम्बर 2003 में श्रीरामशरणम् में श्री महाराज का कमरा बनाया गया। महाराज जी की जालन्धर पर विशेष कृपा रही और वे प्रायः यहाँ आते रहे।

साधकों की बढ़ती संख्या के कारण कॉलोनी निवासियों को वाहनों की पार्किंग के कारण असुविधा न हो इसके लिए दिसम्बर 2005 में श्रीरामशरणम् के पीछे 70 मरले जगह में पार्किंग स्थल बनाया गया, जिसमें लगभग 60–70 कारें और 100 स्कूटर हर सप्ताह पार्क होते हैं।

वर्ष 2011 में दीपावली के अवसर पर परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी महाराज 24 अक्तूबर से 27 अक्तूबर जालन्धर में रहे। श्रीरामशरणम् में प्रातः एवं सायं सत्संग हुए। बहुत भारी संख्या में विभिन्न शहरों के साधक सम्मिलित होते रहे। दीपावली के दिन अनेक साधकों ने अपने घरों में दीपावली न मना कर श्रीरामशरणम् में ही मनाई। उस दिन परम पूजनीय महाराज जी ने फरमाया था,''ऐसी दीवाली न मनाई गई और न कभी मनाई जाएगी।'' दीपावली का वह उत्सव सब साधकों को अविस्मरणीय रहेगा। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

जुलाई से सितम्बर 2022

- **हरिद्वार** में परम पूज्य डा. विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 30 जून से 3 जुलाई तक साधना सत्संग लगा जिसमें 19 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य 8 जुलाई से 13 जुलाई तक साधना सत्संग लगा।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 13 जुलाई गुरु पूर्णिमा को 141 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 27 से 29 जुलाई तक खुला सत्संग लगा।
- **झाबुआ,** मध्य प्रदेश में 29 से 31 जुलाई तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **बानमोर,** मध्यप्रदेश में 31 जुलाई को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 88 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **काठमण्डू,** नेपाल में 5 से 7 अगस्त तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ, 74 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक,** हरियाणा में 13 से 14 अगस्त तक खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 21 अगस्त को 39 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली श्रीरामशरणम्** में 11 सितम्बर को 37 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 26 सितम्बर से 5 अक्तूबर तक रामायणी सत्संग होगा।

परमात्मा श्री राम एवं परम पूजनीय गुरुजनों की कृपा व आशीर्वाद से 'श्रीरामशरणम् औबेदुल्लागंज' का स्थापना दिवस (26 घंटे के अखंड जप यज्ञ व 4 घंटे के खुले जाप) कुल 30 घंटे के जाप एवं दिव्य सत्संग के साथ पूरे भाव चाव के साथ संपन्न हुआ। ''चंचल मन को शांत करने के लिए, अचंचल व स्थिर बनाने के लिए भक्ति की माँग के अनुसार, भीतर... और भीतर... जाना होगा। संसार अस्थिर है उस पर ध्यान लगाने से मन कभी स्थिर नहीं हो सकेगा।'' परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज जी के उक्त आशय के दुर्लभ प्रवचनों को भी सभी ने बहुत ध्यान से सुना। मंगल उत्सव में भजन कीर्तन का आनंद भी अद्भुत था। साधक – गायक भाई व बहिनों ने परम पूजनीय गुरुजनों की प्रिय धुनों और भजनों को सुमधुर स्वर लहरी में सजा कर खूब अमृत बरसाया। '192 नये साधकों (129 देवियों और 63 पुरुषों) ने नाम दीक्षा ग्रहण की। लगभग ₹4000 की साहित्य सामग्री का विक्रय भी हुआ। ■

Online Satsangs

With the Grace of Pujniya Gurujans, online Satsangs are been enthusiastically attended by Sadhaks. These have been broadcasted through Shree Ram Sharnam's official Facebook and Youtube channel. Daily average attendance has been ever growing and Sunday Satsangs are also being attended and enjoyed by Sadhaks around the world.

Special programmes have been attended by large numbers. The special event to mark the celebration of Nirvan Diwas of Pujniya Maharaj ji on 2nd July 2022, featured Akhand Ramayan Ji Path which was viewed by 3089 devotees.

On 2nd of every month online Sundarkand Path is broadcast and is attended and enjoyed by many Sadhaks. On 13th July 2022, a Special online Satsang was broadcast for Vyas Poornima with sessions in morning and evening. Both sessions had Bhajans, which are our treasure, as they are written by our beloved Swami Satyanand Ji Maharaj. On YouTube the Satsangs had a combined viewership of 4627 and on Facebook it was 7280.

August marks beginning of festivals and online Satsang reflect the festivities and relevant Bhajans are sung by singers of Shree Ram Sharnam.

Janmashtami on 19th August 2022 had two special online sessions in the morning and evening. Both had a combined viewership of 4147 Sadhaks on Facebook and 4128 on YouTube.

All information and links for the online Satsang are available on the official website of Shree Ram Sharnam. ■

Children's Page

Mindful Drawing of Your Breath

Let's begin by first understanding the meaning of the word 'Mindful'. Think about it for a minute before you read further. Write down in the box provided some key words that come to mind when you think about the word 'Mindful' or you may decide to get creative and draw images that come to mind that depict what you think it means.

Did you have words/drawings that portray any of below?

• Yoga • Breathing • Calm • Happy • Ocean • Still-Mind • Rainbow • Hearts • Positive-Thoughts • Being-Present • Caring

Well done for giving it a try!

According to Cambridge Dictionary, 'Mindful' means being deliberately aware of your body, mind, and feelings in the present moment, in order to create a feeling of calm.

One of the ways of being mindful, is to focus on your breath. This is a powerful tool to help you let go of any big emotion you might be feeling. Big emotion could be any feeling that makes you uncomfortable like, anxiety, anger, or irritation.

Focussing on your breath can help you connect to the present moment and make you feel relaxed and calm.

The following activity helps you do just that.

Activity: Drawing the Breath

For this activity you will need-

1. A blank piece of paper, bigger the better (preferably without lines)
2. A pencil or pen of any colour
3. A quiet space

Take a minute out of your busy schedule to deep breathe and discover how you feel right now.

Breathe IN- make a line moving upwards

Breathe OUT - make a line moving downwards

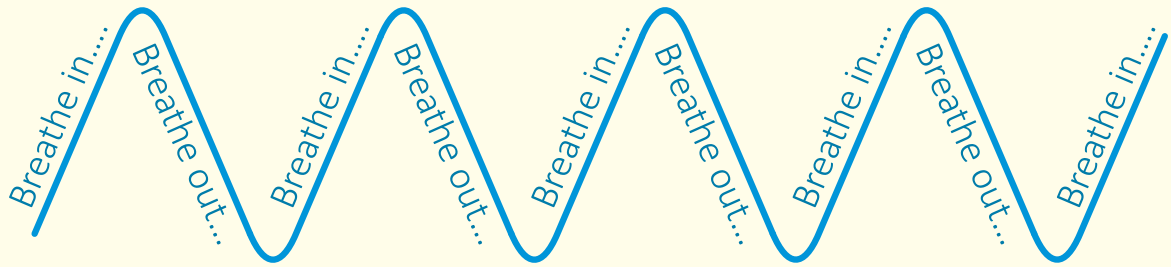

Tips:

- Your drawing would look similar to the one above, but without any words.
- Don't lift your pen off the paper until a minute has passed
- Draw the up and down lines close to each other so you don't run out of space in your paper

Notice your drawing after a minute has passed. You will see that the lines become longer as you start to relax. Enjoy! ■

पूजनीय प्रेम जी महाराज का अवतरण दिवस 2 अक्तूबर
पूजनीय स्वामी जी महाराज निर्वाण दिवस 13 नवम्बर
पूजनीय प्रेम जी महाराज का तिलक दिवस 29 नवम्बर
पूजनीय महाराज का तिलक दिवस 9 दिसम्बर

Sadhna Satsang (October to December 2022)

Haridwar (Ramayani Satsang)	26 Sept to 5 Oct	Monday to Wednesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Fazalpur (Kapurthala)	18 to 21 November	Friday to Monday

Open Satsang (October to December 2022)

Gurdaspur	7-9 October	Friday to Sunday
Pathankot	15-16 October	Saturday to Sunday
Jammu	28-30 October	Friday to Sunday
Melbourne	4 -6 November	Friday to Sunday
Amritsar	06-Nov	Sunday
Sujanpur	25-27 November	Friday to Sunday
Alampur(H.P)	04-Dec	Sunday
Rattangarh	5 to 6 December	Monday to Tuesday
Bhiwani	10-11 December	Saturday to Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday to Sunday
Rewari	23 to 24 December	Friday to Saturday

Diksha In Other Centres (October to December 2022)

Gurdaspur, Punjab	Sunday	09-Oct
Pathankot, Punjab	Sunday	16-Oct
Jammu, J&K	Sunday	30-Oct
Amritsar, Pujab	Sunday	06-Nov
Fazalpur, Punjab	Sunday	20-Nov
Sujanpur, Punjab	Sunday	27-Nov
Alampur, HP	Sunday	04-Dec
Rattangarh	Monday	05-Dec
Bhiwani, Haryana	Sunday	11-Dec
Surat, Gujrat	Sunday	18-Dec
Rewari, Haryana	Saturday	24-Dec

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (October to December 2022)

October	23	Sunday
November	20	Sunday
December	25	Sunday

Purnima (October to December 2022)

October	9	Sunday
November	8	Tuesday
December	8	Thursday

31st December to 1st January Ramayan Ji Paath, Shree Ram Sharnam, Delhi

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924